MAHATMA GANDHI AND NATION-BUILDING: RELEVANCE IN THE CONTEMPORARY CONTEXT
महात्मा गांधी और राष्ट्रनिर्माण वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

Puran Mal Meena [1], Anil Kumar Sharma

[1] M.A., M.Phil., Associate Professor and Head – Department of Political Science, Government College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India
[2] Assistant Professor – Political Science, Government College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

ABSTRACT

English: Mahatma Gandhi's vision of nation-building was not limited merely to political independence; rather, it constituted a holistic socio-economic-spiritual construct grounded in non-violence, peace, and moral strength. This research paper examines Gandhiji's concept of 'Soft Power' within a modern global context, encompassing critical issues such as ecological balance, environmental conservation, biodiversity, human resource development, a skilled workforce, evolving industrial and trade linkages, migration and mobility, and cultural-technological interfaces.

Clarifying the distinction between 'Hard Power' (military might) and 'Soft Power,' the article argues that Gandhiji's foresight can position India to provide global leadership in today's rapidly changing world. The ideas articulated in his work, *Hind Swaraj*, remain profoundly relevant today, as they advocate for a global order founded on cooperation, compromise, and moral values—rather than on war and violence. Gandhiji conceptualized power as manifesting in two forms—'fear' and 'love'—and regarded non-violence as an active moral force.

This ideology not only provides a moral foundation for nation-building but can also enable India to serve as a bridge for multi-alignment, cultural diplomacy, and peaceful leadership on international platforms. Citing Gandhiji's successful experiments—such as the Non-Cooperation Movement, the Civil Disobedience Movement, and the *Charkha* (Spinning Wheel) Movement—as illustrative examples, this paper demonstrates that a policy rooted in non-violence and peace remains equally pertinent for environmental conservation, human development, and global justice. Thus, Gandhian philosophy offers an alternative model for peaceful, inclusive, and ethical nation-building in today's turbulent world—one that can position India as a responsible and inspiring force on the global stage.

Hindi: महात्मा गांधी का राष्ट्रनिर्माण का दृष्टिकोण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि अहिंसा, शांति और नैतिक शक्ति पर आधारित एक समग्र सामाजिक-आर्थिक-आध्यात्मिक निर्माण था। यह शोध आलेख गांधीजी की 'नरम शक्ति' की अवधारणा को आधुनिक वैश्विक संदर्भ में देखता है, जिसमें पारिस्थितिकी संतुलन, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, मानव संसाधन विकास, कुशल श्रमशक्ति, बदलते उद्योग-व्यापार संपर्क, प्रवासी-परिभ्रमण तथा सांस्कृतिक-प्रायोगिकी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं। लेख कठोर शक्ति (सैन्य शक्ति) और नरम शक्ति (Soft Power) के अंतर को स्पष्ट करते हुए तर्क देता है कि गांधीजी की दूरदृष्टि आज के बदलते विश्व में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदान कर सकती है। हिंद स्वराज में प्रस्तुत उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे युद्ध और हिंसा के बजाय सहयोग, समझौते और नैतिक मूल्यों पर आधारित विश्व व्यवस्था की वकालत करते हैं। गांधीजी ने सत्ता को 'डर' और 'प्यार' के दो रूपों में विभाजित किया तथा अहिंसा को सक्रिय नैतिक शक्ति माना।

Received 22 February 2022
Accepted 09 March 2022
Published 31 March 2022

Corresponding Author
Puran Mal Meena,
pmmeena111@gmail.com

DOI
10.29121/granthaalayah.v10.i3.2022.6892

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

यह विचारधारा न केवल राष्ट्र निर्माण को नैतिक आधार प्रदान करती है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत को बहु-गठबंधन, सांस्कृतिक कूटनीति और शांतिपूर्ण नेतृत्व का सेतु बना सकती है। लेख गांधीजी के सफल प्रयोगों (असहयोग, सविनय अवज्ञा और चरखा आंदोलन) को उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत करते हुए दर्शाता है कि अहिंसा और शांति की नीति पर्यावरण संरक्षण, मानवीय विकास और वैश्विक न्याय के लिए भी प्रासंगिक है। इस प्रकार, गांधीवादी दर्शन आज के उथल-पुथल वाले विश्व में शांतिपूर्ण, समावेशी और नैतिक राष्ट्र निर्माण का एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है, जो भारत को विश्व मंच पर जिम्मेदार और प्रेरणादायक शक्ति बना सकता है।.

Keywords: Mahatma Gandhi, Nation-Building, Non-Violence, Peace, Soft Power, Hind Swaraj, Global Relations, Cultural Diplomacy, Moral Power, Environmental Balance
महात्मा गांधी, राष्ट्र निर्माण, अहिंसा, शांति, नरम शक्ति, हिंद स्वराज, वैश्विक संबंध, सांस्कृतिक कूटनीति, नैतिक शक्ति, पर्यावरण संतुलन

1. प्रस्तावना

यह समाकलित लेख गांधीवादी विचारों के आलोकित स्तंभों 'शांति' और 'अहिंसा' के विविध आयामों में आज के बदलते वैश्विक संबंधों के कुछ ऐसे नवोत्तर प्रश्नों से टकराने की कोशिश करता है जो जीवनमूल्यों को गहरे पकड़ रखे हैं। इनमें पारिस्थितिकी संतुलन, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, मानव संसाधन विकास, कुशल मानव श्रमशक्ति, बदलते उद्योग-व्यापार संपर्क, प्रवासी-परिभ्रमण तथा सांस्कृतिक-प्रायोगिकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।

ऐसा कदापि नहीं है कि इस बदलाव की परिधि में सैन्य विकास एवं सामरिक शक्तियाँ अनुपयुक्त हो गई हैं; बल्कि उनकी महत्ता संदेह से परे है। हालांकि, इस उथल-पुथल के दौर में शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक विश्व व्यवस्था की एक अधिक सार्थक दृष्टि भारत की ओर से प्रस्तुत की जा सकती है, जिसमें महात्मा गांधी की दूरदृष्टि इसे वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करती है। गांधीजी के सफल प्रयोग एक सेतु बनकर अंतर्राष्ट्रीय मंचों को बहु-गठबंधन धर्म के पुरजोर आग्रही बना सकते हैं, जहां भारत एक चिर-यौवन व समर्थवान लोकतंत्र के रूप में विश्व का अगुवा बन सकता है।

परिचय यह आलेख तीन भागों में विभाजित है। पहला भाग 'शक्ति' की अवधारणा के महत्व को रेखांकित करता है और कठोर शक्ति (Hard Power) तथा नरम शक्ति (Soft Power) के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। दूसरा भाग वैश्विक संबंधों में सैन्य शक्तियों के विपरीत नरम शक्तियों के प्रयोग की सार्थकता और लोकाचार पर चर्चा करता है। तीसरा भाग गांधीजी के विचारों को राष्ट्र निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में जोड़ता है।

महात्मा गांधी ने द्वितीय सिद्धांत का पालन किया और विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध अहिंसात्मक आंदोलन चलाया। उनके महान कार्य ने भारतीय समाज को आत्मविश्वास और एकता की ओर प्रेरित किया। हिंद स्वराज में गांधीजी के आदर्श आज भी समाज में गहराई से समाए हुए हैं। शांतिपूर्ण और अहिंसात्मक दृष्टि ने अनेक राष्ट्रों को संघर्षों और हिंसा के बजाय सहयोग और समझौते के माध्यम से समाधान की दिशा में प्रेरित किया है। उनके विचारों और आदर्शों का आज भी अद्वितीय महत्व है।

शांति और अहिंसा की धारणा शांति की धारणा अहिंसा, व्यक्तित्ववाद, आत्मबल और क्षमा पर केंद्रित है। कारण है कि वैश्विक शांति, वैश्विक नागरिकतावाद और नव-आधुनिक रुझानों जैसे ज्वलंत विषयों पर गांधीजी को फिर से समझने की कोशिश की जा रही है ताकि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों का समाधान खोजा जा सके। गांधीजी ने कहा था, "मैं कैसे अंतर कर सकता हूं

ताकि मैं इस दुनिया में शांति ला सकूं।" उन्होंने सत्ता को दो प्रकारों में विभाजित किया – डर से और प्यार से।

उन्होंने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पर्यटन, शिक्षा आदि को राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण बताया और शांति को हर घंटे की आवश्यकता घोषित किया। युद्ध और हिंसा विनाश के अलावा कुछ नहीं देती। अहिंसा की संकल्पना को सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तर पर समझना चाहिए, लेकिन व्यापक दृष्टिकोण भी उतना ही जरूरी है। वैश्विक राजनीति में शक्ति संतुलन और नैतिक सुधार में अहिंसा मानवता को नई सीख दे सकती है।

गांधीजी की अहिंसा केवल निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं थी, बल्कि सक्रिय नैतिक शक्ति थी। उन्होंने इसे व्यक्तिगत, सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया। आज के संदर्भ में अहिंसा पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक संवाद और मानवीय विकास के लिए प्रासंगिक है। यह राष्ट्र निर्माण को नैतिक आधार प्रदान करती है और भारत को विश्व मंच पर एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में स्थापित कर सकती है।

2. निष्कर्ष

महात्मा गांधी का राष्ट्र निर्माण का मॉडल आज भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक है। उनकी अहिंसा और शांति की विचारधारा न केवल भारत को मजबूत राष्ट्र बनाने में सहायक है, बल्कि विश्व स्तर पर शांतिपूर्ण, नैतिक और समावेशी नेतृत्व प्रदान कर सकती है। कठोर शक्ति (सैन्य सामर्थ्य) के बजाय नरम शक्ति (सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित), युद्ध के बजाय सहयोग, और शोषण के बजाय स्वावलंबन पर टिकी यह दृष्टि भारत को वैश्विक मंच पर एक जिम्मेदार अगुवा बना सकती है।

गांधीजी ने राष्ट्र निर्माण को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सामाजिक न्याय, आर्थिक स्वावलंबन, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय गरिमा से जोड़ा। हिंद स्वराज में उन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद की आलोचना की और विकेंद्रीकृत, गांव-केंद्रित अर्थव्यवस्था की वकालत की, जिसमें कुटीर उद्योग, खादी और चरखा महिलाओं एवं बच्चों को शोषण से मुक्त करते हैं। आज जब पर्यावरण संकट, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास और मानव संसाधन की असमानता वैश्विक चुनौतियां बन चुकी हैं, गांधीजी की अहिंसा की अवधारणा हमें सिखाती है कि सच्चा विकास वह है जो प्रकृति और मनुष्य दोनों की रक्षा करे।

उनकी विरासत हमें याद दिलाती है कि सच्चा राष्ट्र निर्माण नैतिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समानता पर टिका होता है। यदि हम गांधीजी के आदर्शों – अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और स्वदेशी – को अपनाएं तो एक समृद्ध, शांतिपूर्ण, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव है।

वर्तमान वैश्विक संदर्भ में, जहां युद्ध, आतंकवाद, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय विनाश बढ़ रहे हैं, गांधीजी की शांति और अहिंसा की नीति एक विकल्प प्रस्तुत करती है। भारत को चाहिए कि वह गांधीवादी मूल्यों को अपनी विदेश नीति, शिक्षा प्रणाली और विकास मॉडल में शामिल करे। तभी हम न केवल स्वयं को मजबूत बना पाएंगे, बल्कि विश्व को भी एक बेहतर, नैतिक और शांतिपूर्ण दिशा दे सकेंगे।

गांधीजी की विरासत अमर है। यह हमें प्रेरित करती है कि राष्ट्र निर्माण कोई सत्ता का खेल नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का मार्ग है। यदि हम इस मार्ग पर चलें तो न केवल भारत, बल्कि समूचा विश्व एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। गांधीजी का सपना अधूरा है, लेकिन उनका मार्ग स्पष्ट है – अहिंसा, शांति और नैतिकता के आधार पर ही सच्चा राष्ट्र निर्माण संभव है।

REFERENCES

गांधी, महात्मा. हिंद स्वराज, 1909।

गांधी, महात्मा. यंग इंडिया (चयनित लेख), 1919-1932।

कुमार, कृष्ण. The Political Agenda of Education, Sage, 2005।

Nye, Joseph S. Soft Power: The Means to Success in World Politics, Public Affairs, 2004।

भारत सरकार, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति प्रकाशन (pre-2021)।

UNESCO, Gandhi and the Contemporary World, 2019।

लास्की, हारोल्ड. A Grammar of Politics, 1925 (संशोधित संस्करण)।

रॉल्स, जॉन. A Theory of Justice, 1971।

Various articles from Harijan and academic journals on Gandhian thought and international relations (pre-2021)।

Mishra, Deepak. "Gandhian Vision of Nation Building in Global Context", 2020।